

न्यायालय अतिरिक्त जिला कलक्टर (चतुर्थ), जयपुर
पीठासीन अधिकारी:- डॉ. अशोक कुमार RAS

राजस्व रेफरेन्स संख्या : 339/2018

सरकार जरिये तहसीलदार, आमेर, जिला-जयपुर।

प्रार्थी,

बनाम

1. सूणीलाल पुत्र स्व० श्री गंगाराम, जाति-जाट, निवासी-हरमाडा, तहसील-आमेर, जिला जयपुर।
2. कानाराम पुत्र स्व० श्री गंगाराम, जाति-जाट, निवासी-हरमाडा, तहसील-आमेर, जिला जयपुर।
3. गोपीराम पुत्र स्व० श्री गंगाराम, जाति-जाट, निवासी-हरमाडा, तहसील-आमेर, जिला जयपुर।
4. लल्लूराम पुत्र स्व० श्री गंगाराम, जाति-जाट, निवासी-हरमाडा, तहसील-आमेर, जिला जयपुर।
5. प्रभाती पत्नी स्व० श्री गंगाराम, जाति-जाट, निवासी-हरमाडा, तहसील-आमेर, जिला जयपुर।
6. लाडा देवी पत्नी स्व० श्री सुजाराम, जाति-जाट, निवासी-हरमाडा, तहसील-आमेर, जिला जयपुर।

अप्रार्थीगण,

(राजस्व रेफरेन्स अन्तर्गत धारा 82 राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम,
1956)

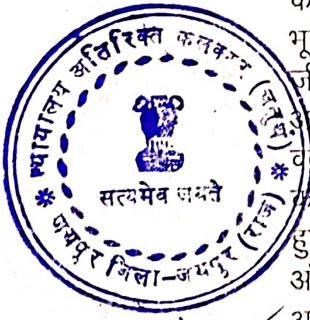
उपस्थिति:-

1. श्री प्रहलाद रावत, राजकीय अभिभाषक उपस्थित।
2. श्री एस.एस.सुण्डा, अभिभाषक, अप्रार्थी सं० 1 लगा० 5 की ओर से।
3. अप्रार्थी सं० 6 बावजूद सूचना अनुपस्थित। इनके विरुद्ध एकपक्षीय कार्यवाही की गई।

निर्णय

दिनांक: 16.07.2021

संक्षेप में प्रकरण इस प्रकार है कि तहसीलदार, आमेर द्वारा रेफरेन्स प्रस्तुत कर निवेदन किया कि खतौनी बन्दोबस्त सम्वत् 2010-23 ग्राम नांगल सिरस की भूमि ख०न० 163 गी. कुल रकबा 11 बिस्वा का अंकन माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश जी के नाम से दर्ज थी। जिसके वर्तमान गिसल बन्दोबस्त सम्वत् 2046-65 के अनुसार नवीन ख०न० 365, 366 कुल किता 2 कुल रकबा 0.11 है० है। उक्त भूमि वर्तमान राजस्व रिकार्ड में अप्रार्थीगण के नाम से अंकित है। तत्कालीन राजस्व कर्मियों द्वारा बिना किसी सक्षम आदेश के मंदिर की भूमि का नाम विलोपित करते हुए सीधे ही गंगाराम, सूजाराम पुत्रान् झुंगाराम, कौम जाट साकिन देह के नाम अंकित कर दी गई। माफी मंदिर की स्थिति कानून शास्वत अवयस्क होती है। अवयस्क के हितों का इस प्रकार हरतान्तरण नहीं किया जा सकता। प्रार्थी द्वारा भूमिधारी की हैसियत से यह प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया गया है। तहसीलदार द्वारा रेफरेन्स प्रस्तुत कर अप्रार्थीगण के नाम राजस्व रिकार्ड में अंकित भूमि को पुनः माफी मंदिर के नाम दर्ज करने हेतु यह रेफरेन्स प्रस्तुत किया गया है।



प्रकरण प्राप्त होने पर दर्ज रजिस्टर कराया गया। अप्रार्थीगण को जरिये नोटिस तलबी की गई। अप्रार्थी सं० 6 बावजूद सूचना अनुपस्थित। अतः इनके विरुद्ध एकपक्षीय कार्यवाही की गई। अप्रार्थी अभिभाषक द्वारा जवाब प्रस्तुत नहीं किया गया।

विद्वान् राजकीय अभिभाषक द्वारा दौराने बहस कथन किया किया कि वर्तमान राजस्व रिकार्ड जमाबंदी अनुसार वादग्रस्त भूमि अप्रार्थीगण खातेदारान के नाम दर्ज रिकार्ड है तथा मिलान क्षेत्रफल ग्राम नांगलसिरस के हाल ख०न० के साबिक ख०न० 163 मी. कुल रकबा 11 बिस्वा मुताबिक खतौनी बन्दोबस्त सम्वत् 2010-23 की कॉलम सं० 3 में माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश जी का नाम अंकित है तथा कॉलम सं० 4 में खातेदार डोंगा वल्द जीवण कौम जाट साकिन देह दर्ज है। अप्रार्थीगण डोंगा वल्द जीवण के वारिसान है। तत्कालीन राजस्व कर्मियों द्वारा बिना किसी सक्षम आदेश के मंदिर का नाम विलोपित करते हुए सीधे ही अप्रार्थीगण के नाम भूमि का अंकन कर दिया गया। माफी मंदिर की स्थिति कानून शास्वत अवयस्क होती है। अवयस्क के हितों का इस प्रकार हस्तान्तरण नहीं किया जा सकता। अतः अवैधानिक रूप से अप्रार्थीगण के विरुद्ध दी गई खातेदारी को निरस्त करते हुए पुनः राजस्व रिकार्ड में माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश जी का नाम अंकित किया जावे।

विद्वान् अधिवक्ता अप्रार्थीगण की बहस सुनी गई। विद्वान् अधिवक्ता अप्रार्थीगण ने दौराने बहस कथन किया कि ग्राम नांगल सिरस तहसील आमेर, जिला-जयपुर में स्थित आराजी ख०न० 163 मी. कुल रकबा 11 बिस्वा का अंकन माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश जी के नाम से दर्ज थी। जिसके वर्तमान मिसल बन्दोबस्त सम्वत् 2046-65 के अनुसार नवीन ख०न० 365, 366 कुल किता 2 कुल रकबा 0.11 है० है। भूमि राजस्थान काश्तकारी अधिनियम प्रभाव में आने से पूर्व माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश की मिल्कियत में दर्ज थी। डोंगा वल्द जीवण जाति-जाट उक्त भूमि के खातेदार, काश्तकार थे और डोंगा वल्द जीवण के नाम खातेदार कृषक के रूप में दर्ज थी।

जमाबंदी खतौनी बन्दोबस्त सम्वत् 2010-23 के कॉलम सं० 3 में जहां मातमीदार का नाम दर्ज था, उस कॉलम में अब माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश के स्थान पर राजस्थान सरकार का नाम अंकित किया गया है। राजस्व रिकार्ड के कॉलम नं० 4 में डोंगा वल्द जीवण का नाम पहले भी खातेदार कृषक के रूप में दर्ज था और उसके पश्चात् भी खातेदार कृषक के रूप में ही नाम दर्ज रखा गया है, इस प्रकार राजस्व भू-अभिलेखों में खातेदार के कॉलम में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन किया ही नहीं गया है। विवादग्रस्त भूमि के स्वामित्व को किसी भी प्रकार से हस्तान्तरित नहीं किया गया है। विवादग्रस्त भूमि का स्वामित्व पूर्व में भी माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश के पास था और राजस्थान (भूमि सुधार एवं जागीर पुर्नग्रहण) अधिनियम, 1952 तथा राजस्थान काश्तकारी अधिनियम, 1955 के प्रभाव में आने के पश्चात् राजस्थान सरकार को प्राप्त हो गया। चूंकि वादग्रस्त भूमि कभी मंदिर श्री द्वारकाधीश जी की खुदकाश्त भूमि नहीं थी। अतः मंदिर को खातेदारी अधिकार प्राप्त नहीं हुए। डोंगा वल्द जीवण खातेदार कृषक थे। अतः उनका नाम जागीर पुर्नग्रहण होने पर उन्हे खातेदारी अधिकार प्राप्त हो गये और राजस्व अभिलेखों में उनका नाम पुर्वानुसार खातेदार कृषक के रूप में अंकित रहा।

डोंगा वल्द जीवण का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी विरासत का नामान्तरकरण उनके उत्तराधिकारी के नाम होने के कारण तस्दीक किया गया और राजस्व भू-अधिनियम में उक्त सूणीलाल, कानाराम, गोपीराम, लल्लूराम पुत्रान् श्री गंगाराम, प्रभाती देवी पत्नी स्व० श्री गंगाराम हिस्सा 1/2 एवं लाडा देवी पत्नी स्व० श्री सूजाराम हिस्सा 1/2 का नाम खातेदार कृषक के रूप में दर्ज हो गया। अप्रार्थीगण वादग्रस्त भूमि का नियमित रूप से कृषि कार्य हेतु उपयोग व उपभोग करते चले आ रहे है।



Jm

राजस्थान राज्य सरकार ने दिनांक 24.05.2007 का एक परिपत्र जारी कर यह निर्देशित किया है कि "जागीरों के अधिग्रहण के समय मंदिर माफी की भूमि जो किसी व्यक्ति के नाम खातेदार, पट्टेदार अथवा खादिमदार आदि के नाम से दर्ज थी। उन काश्तकारों को पूर्ण उत्तराधिकार योग्य एवं हस्तान्तरणीय अधिकार प्राप्त है। ऐसी भूमि को पुनः मंदिरों के नाम दर्ज किया जाना विधि सम्मत नहीं है। राजस्व रिकार्ड में ऐसे व्यक्तियों का नाम निरन्तर खातेदार के रूप में दर्ज रहेगा। ऐसे परिपत्र के पश्चात् राज्य सरकार को प्रस्तुत रेफरेन्स को आगे चलाने का कोई अधिकार एवं औचित्य नहीं है।

सम्बत् 2010-23 की मिसल बन्दोबस्त में ही खातेदार कृषक के रूप में डोंगा वल्द जीवण का नाम दर्ज है। यदि उसे अवैध इन्द्राज की संज्ञा दी जावे तो यह इन्द्राज 50 वर्ष से भी अधिक वर्ष पूर्व अंकित किये गये हैं। अतः प्रस्तुत रेफरेन्स अत्याधिक विलम्ब से प्रस्तुत किये जाने के कारण निरस्तनीय है। विद्वान् अधिवक्ता अप्रार्थीगण द्वारा अपने कथन के समर्थन में निम्नलिखित न्यायिक दृष्टान्त पेश किये गये :-

1. RRD 2000 Page No. 14
2. RLR 1985
3. RRD 2015 Page No. 556 Rajasthan High Court
4. RRD 1991
5. परिपत्र दिनांक 13.12.1991 (राज. सरकार)
6. परिपत्र दिनांक 24.05.2007 (राज. सरकार)
7. निर्णय दिनांक 23.04.2012 (माननीय राजस्व मण्डल राजस्थान, अजमेर)

हमने उभयपक्ष की बहस सुनी। पत्रावली का अवलोकन किया। अप्रार्थीगण द्वारा प्रस्तुत न्यायिक दृष्टान्तों का ससम्मान अवलोकन किया।

प्रकरण के अवलोकन करने पर यह पाया गया है कि तहसीलदार, आमेर द्वारा ख0नं0 163 मी. कुल रकबा 11 बिस्वा का अंकन माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश जी के नाम से दर्ज था। जिसके वर्तमान मिसल बन्दोबस्त सम्बत् 2046-65 के अनुसार नवीन ख0नं0 365, 366 कुल किता 2 कुल रकबा 0.11 है0 का रेफरेन्स तैयार कर प्रस्तुत किया गया है। तहसीलदार द्वारा प्रस्तुत रेफरेन्स अनुसार सम्बत् 2010-23 की मिसल बन्दोबस्त में वादग्रस्त भूमि माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश जी के नाम अंकित थी, परन्तु राजस्व रिकार्ड का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट है कि खतौनी बन्दोबस्त सम्बत् 2010-23 में कॉलम नं0 3 में माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश अंकित है एवं कॉलम नं0 4 में डोंगा वल्द जीवण कौम जाट साकिन देह अंकित है।

मुताबिक खतौनी बन्दोबस्त सम्बत् 2010-23 की कॉलम सं0 3 में माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश जी का नाम अंकित है तथा कॉलम सं0 4 में खातेदार डोंगा वल्द जीवण कौम जाट साकिन देह दर्ज है। अप्रार्थीगण डोंगा वल्द जीवण के वारिसान है। राज्य सरकार के परिपत्र क्रमांक प.3(2) राज-6/2007/44 दिनांक 24.05.2007 के अनुसार जागीरों के अधिग्रहण के समय मंदिर माफी की भूमि को किसी व्यक्ति के नाम खातेदार, पट्टेदार अथवा खादिमदार आदि के नाम दर्ज थी, ऐसे भूमियों को पुनः मंदिर माफी के नाम दर्ज किया जाना विधि सम्मत नहीं है।

राजस्व (गुप-6) विभाग ने परिपत्र क्रमांक प.3(2)राज-6/2007/14 मुयपुर दिनांक 24.05.2007 को जारी कर यह स्पष्ट किया गया है कि ऐसी भूमि जो मंदिर माफी की थी के संबंध में राजस्थान भूमि सुधार तथा जागीर पुनर्ग्रहण अधिनियम, 1952 की धारा 9 में प्रावधान किया गया है। इस अधिनियम के प्रभावी होने के समय जो व्यक्ति राजस्व रिकार्ड में पट्टेदार, खादिमदार या अन्य किसी के नाम से दर्ज थे वे निरन्तर खातेदार बने रहेंगे। जागीरों के अधिग्रहण के समय मंदिर माफी की भूमि जो किसी व्यक्ति के नाम खातेदार, पट्टेदार अथवा खादिमदार आदि नाम से दर्ज थी उनमें उन काश्तकारों को पूर्ण उत्तराधिकार योग्य



[Handwritten signature]

एवं हस्तान्तरणीय अधिकार प्राप्त है। ऐसी भूमियों को पुनः मंदिरों के नाम दर्ज किया जाना विधि सम्मत नहीं है। राजस्व रिकार्ड में ऐसे व्यक्तियों के नाम निरन्तर खातेदार के रूप में दर्ज रहेगा। माननीय उच्च न्यायालय में वृहद पीठ द्वारा प्रकरण 2015 (2) आर.आर.टी.868 तारा बनाम सरकार में माननीय न्यायालय द्वारा अपने निर्णय में स्पष्ट किया है कि जागीर/मंदिर माफी की भूमियों पर तत्कालीन जागीरदार द्वारा मंदिर माफी की भूमि पर अन्य व्यक्तियों द्वारा भूमि काश्त कराने पर भूमि राज्य हित में निहित होगी, परन्तु जागीर पुनर्ग्रहण के समय मंदिर माफी की भूमि पर यदि पुजारी अथवा अन्य व्यक्ति द्वारा काश्त की जा रही थी तो तत्कालीन कृषक का नाम राजस्व रिकार्ड से विलोपित करने का अधिकार नहीं होगा और यदि जागीर भूमियों पर किसी कृषक का नाम विलोपित कर दिया गया है तो राजस्व रिकार्ड में ऐसी की गई सभी प्रवृत्तियां आकृत व शून्य (Null & Void) मानी जायेगी।

हस्तगत प्रकरण में भी खतौनी बन्दोबस्त सम्वत् 2010-23 में वादग्रस्त भूमि के कॉलम नं० 4 में कृषक के कॉलम में डोंगा वल्द जीवण कौम जाट साकिन देह दर्ज था। अप्रार्थीगण डोंगा वल्द जीवण के वारिसान है तथा अप्रार्थीगण के नाम वर्तमान में खातेदारी दर्ज रिकार्ड है। वादग्रस्त भूमि जागीर अधिग्रहण के समय माफी मंदिर श्री द्वारकाधीश जी के नाम दर्ज है तथा कॉलम नं० 4 कृषक के कॉलम में डोंगा वल्द जीवण कौम जाट दर्ज रिकार्ड है। हस्तगत प्रकरण में माफी मंदिर खुदकाश्त होने के संबंध में तहसीलदार द्वारा कोई दस्तावेज प्रस्तुत किया है।

अतः उक्त उक्त विवचेनानुसार तहसीलदार, आमेर द्वारा प्रस्तुत रिकार्ड एवं रिपोर्ट के अवलोकन से स्पष्ट है कि हस्तगत प्रकरण में वादग्रस्त भूमि माफी मंदिर की खुदकाश्त भूमि नहीं होकर कृषक के नाम थी। माननीय उच्च न्यायालय में वृहद पीठ द्वारा प्रकरण 2015 (2) आर.आर.टी.868 तारा बनाम सरकार एवं राज्य सरकार के परिपत्र क्रमांक 3 (2) राज-6/2007/14 जयपुर दिनांक 27.05.2007 के परिपेक्ष्य में इस हस्तगत रेफरेन्स प्रकरण में कार्यवाही किया जाना उचित नहीं समझते हैं। अतः प्रस्तुत रेफरेन्स स्वीकार किये जाने योग्य नहीं होने के कारण खारिज किया जाता है।

पत्रावली दर्ज रजिस्टर से कम हो। बाद तकमिल दाखिल दफ्तर हो। निर्णय आज दिनांक 16.07.2021 को खुले न्यायालय में सुनाया गया।



(Signature)
16.7.21
(डॉ. अशोक कुमार)
बातिरिक्त कलक्टर (चतुर्थ)
जयपुर